This PDF of 'IGNOU IQ Hindi' is not for selling or sharing, otherwise legal action can be taken against you.

ASSIGNMENT

BPSC - 113

Disclaimer for this Guess Paper/Notes/Sample Papers By IGNOU IQ HINDI (IIH)

This PDF contains previous year questions asked by IGNOU. This PDF has been created to help you in the exam. However, It is important to note the following :

A. No Guarantee of Examination Questions: We do not guarantee that the questions presented in this sample paper will appear in your actual exams. The content is for practice purposes only.

B. Book Study Recommended: To achieve good marks in your IGNOU exams, it is highly recommended that you thoroughly study the prescribed course materials and textbooks. Relying solely on this sample paper may not be sufficient for exam success.

C. Use as a Study Materials : Use this sample paper as a supplementary study aid to test your knowledge and exam preparedness.

D. Self-Responsibility: Your performance in exams is your responsibility, and success depends on your dedication to studying the course material.

PDF By Suraj Kumar Sir (8521027286/6205717642) …….visit our website www.ignouiqhindi.com

हमारे यहाँ Handwritten Assignments/Synopsis/Project बनाया जाता है - 62057107642/8521027286

BPSC-113 : आधुनिक राजनीतिक दर्शन

अध्यापक जाँच सत्रीय कार्य

पाठ्यक्रम कोड: BPSC-113

सत्रीय कार्य कोड: BPSC-113/ASST/TMA/2025-26

अधिकतम अंकः 100

BPSC-113 : आधुनिक राजनीतिक दर्शन

अध्यापक जाँच सत्रीय कार्य

पाठ्यक्रम कोडः **BPSC-113**
सत्रीय कार्य कोड : **BPSC-113/ASST/TMA/2025-26**
अधिकतम अंकः **100**

इस सत्रीय कार्य के तीन भाग हैं। आपको तीनों भागों के सभी प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

सत्रीय कार्य – I

निम्न वर्णनात्मक श्रेणी प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों (प्रत्येक) में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 20 अंकों का है।

1) ज्ञानोदय का अर्थ और उसकी अवधारणा पर चर्चा कीजिए। 20

2) रूसो द्वारा ज्ञानोदय की आलोचना का परीक्षण कीजिए। 20

सत्रीय कार्य – II

निम्न मध्यम श्रेणी प्रश्नों के उत्तर लगभग 250 शब्दों (प्रत्येक) में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 10 अंकों का है।

1) रूसो की आम वसीयत (General Will) क्या है? व्याख्या कीजिए। 10

2) रूसो द्वारा उदार शिक्षा की आलोचना की चर्चा कीजिए। 10

3) मैरी वौल्सटोनक्राफ्ट द्वारा फ्रांसीसी क्रांति के बचाव और एडमंड बर्क के विचारों पर उनकी आलोचना का विस्तारपूर्वक वर्णन कीजिए। 10

सत्रीय कार्य – III

निम्न लघु श्रेणी प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों (प्रत्येक) में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 6 अंकों का है।

1) शिक्षा पर रूसों के विचारों की वौल्सटोनक्राफ्ट द्वारा आलोचना को जाँचिए। 6

2) व्यक्तिवाद पर जे. एस. मिल के विचारों पर चर्चा कीजिए। 6

3) द्वंद्वात्मक पद्धति पर एक लेख लिखिए। 6

4) वर्ग की मार्क्सवादी परिभाषा का विस्तारपूर्वक वर्णन कीजिए। 6

5) घरेलू कामकाज के समाजीकरण पर एलेक्जेंड्रा कोलोंनताई के विचारों की व्याख्या कीजिए। 6

सत्रीय कार्य – I

निम्न वर्णनात्मक श्रेणी प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों (प्रत्येक) में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 20 अंकों का है।

1) ज्ञानोदय का अर्थ और उसकी अवधारणा पर चर्चा कीजिए।

उत्तर : ज्ञानोदय एक 17वीं और 18वीं शताब्दी का बौद्धिक और दार्शनिक आंदोलन था, जिसका अर्थ है 'अज्ञानता का अंत' और 'ज्ञान का उदय'। इसकी मुख्य अवधारणा तर्क, व्यक्तिगत स्वतंत्रता, वैज्ञानिक पद्धति और परंपरावादी सत्ता पर सवाल उठाने पर आधारित थी। इसने समाज में सुधार लाने, धर्मनिरपेक्षता को बढ़ावा देने और स्वतंत्रता, समानता और व्यक्तिगत अधिकारों जैसे विचारों को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

यूरोप में 1650 के दशक से लेकर 1780 के दशक तक की अवधि को **प्रबोधन युग** या **ज्ञानोदय युग** (Age of Enlightenment) कहते हैं। इस अवधि में पश्चिमी यूरोप के सांस्कृतिक एवं बौद्धिक वर्ग ने परम्परा से हटकर तर्क, विश्लेषण तथा वैयक्तिक स्वातंत्र्य पर जोर दिया। ज्ञानोदय ने कैथोलिक चर्च एवं समाज में गहरी पैठ बना चुकी अन्य संस्थाओं को चुनौती दी।

परिचय

यूरोप में 17वीं-18वीं शताब्दी में हुए क्रांतिकारी परिवर्तनों के कारण इस काल को प्रबोधन, ज्ञानोदय अथवा विवेक का युग कहा गया और इसका आधार पुनर्जागरण, धर्मसुधार आंदोलन व वाणिज्यिक क्रांति ने तैयार कर दिया था। पुनर्जागरण काल में विकसित हुई वैज्ञानिक चेतना ने, तर्क और अन्वेषण की प्रवृत्ति ने 18वीं शताब्दी में परिपक्वता प्राप्त कर ली। वैज्ञानिक चिंतन की इस परिपक्व अवस्था को 'प्रबोधन' के नाम से जाना जाता है। प्रबोधनकालीन चिंतकों ने इस बात पर बल दिया कि इस भौतिक दुनिया और प्रकृति में होने वाली घटनाओं के पीछे किसी न किसी व्यवस्थित अपरिवर्तनशील और प्राकृतिक नियम का हाथ है। फ्रांसिस बेकन ने बताया कि विश्वास मजबूत करने के तीन साधन हैं- अनुभव, तर्क और प्रमाण; और इनमें सबसे अधिक शक्तिशाली प्रमाण है क्योंकि तर्क/अनुभव पर आधारित विश्वास स्थिर नहीं रहता।

ज्ञानोदय का अर्थ

- **अज्ञानता का अंत:** ज्ञानोदय का शाब्दिक अर्थ है अज्ञानता को दूर करके ज्ञान और चेतना का विकास करना।
- **प्रगति का प्रतीक:** यह प्रगति का प्रतीक है, जो मानव मन में नवीन और प्रगतिशील सोच को जन्म देता है, जिससे जीवन में सभ्यता और विकास की राह प्रशस्त होती है।
- **मानव बुद्धि का विकास:** यह मानव बुद्धि के विकास की एक अवस्था है जिसमें पुराने और पिछड़े विचारों को त्यागकर नए विचारों को अपनाया जाता है।

ज्ञानोदय की अवधारणा

- **तर्क और वैज्ञानिक पद्धति पर जोर:** ज्ञानोदय के केंद्र में यह विश्वास था कि तर्क और वैज्ञानिक पद्धति के माध्यम से मानव जाति की प्रगति और खुशी संभव है।

- **व्यक्तिगत अधिकार और स्वतंत्रता:** इसने व्यक्तिगत स्वतंत्रता, समानता और व्यक्तिगत अधिकारों जैसे विचारों को बढ़ावा दिया, जो पारंपरिक सत्ता पर सवाल उठाते हैं।
- **धार्मिक और राजनीतिक सुधार:** ज्ञानोदय ने धर्मनिरपेक्ष विचारों को आगे बढ़ाया और चर्च और राज्य के अलगाव की वकालत की।
- **मानवतावाद:** इसने मानवतावाद पर भी जोर दिया, जिसमें विश्वास था कि मानव में खुद को और अपने पर्यावरण को बेहतर बनाने की क्षमता है।
- **जॉन लॉक का प्रभाव:** जॉन लॉक जैसे विचारकों ने तर्क दिया कि सभी मनुष्य "कोरी स्लेट" (tabula rasa) के रूप में पैदा होते हैं और शिक्षा और तर्क के माध्यम से उन्हें विवेकशील बनाया जा सकता है, जिससे समाज में सुधार संभव है।
- **आर्थिक विचार:** ज्ञानोदय के विचारों ने मुक्त अर्थव्यवस्था के सिद्धांत को प्रेरित किया, जैसा कि एडम स्मिथ की रचनाओं में देखा जा सकता है, जो मांग और आपूर्ति के नियमों पर आधारित थी।

2) रूसो द्वारा ज्ञानोदय की आलोचना का परीक्षण कीजिए।

उत्तर : रूसो ने ज्ञानोदय के कुछ मूलभूत सिद्धांतों, जैसे तर्क, प्रगति, और व्यक्तिवाद की तीखी आलोचना की। उन्होंने तर्क दिया कि सभ्यता ने मानव स्वभाव को भ्रष्ट कर दिया है और स्वार्थ व असमानता को बढ़ावा दिया है, जिससे प्राकृतिक सहानुभूति कम हो गई है। इसके बजाय, उन्होंने मानव स्वभाव की अच्छाई पर ज़ोर दिया और तर्क दिया कि नागरिक समाज ने अनावश्यक इच्छाएँ और सामाजिक पदानुक्रम पैदा किए हैं।

ज्ञानोदय की आलोचना के मुख्य बिंदु:

- **सभ्यता और प्रगति का भ्रष्टाचार:** रूसो का मानना था कि ज्ञानोदय द्वारा प्रचारित तार्किक और वैज्ञानिक प्रगति ने वास्तव में नैतिकता को कमजोर किया है। उन्होंने तर्क दिया कि आधुनिक समाज ने मनुष्यों को भौतिकवादी और स्वार्थी बना दिया है, सहयोग और सहानुभूति के बजाय प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा दिया है।
- **व्यक्तिवाद की आलोचना:** ज्ञानोदय के व्यक्तिवाद और स्वार्थ पर रूसो ने आलोचना की, क्योंकि उन्होंने व्यक्तियों को अन्योन्याश्रित माना। उनके अनुसार, ज्ञानोदय का व्यक्तित्व पर अत्यधिक ध्यान केंद्रित करने से मनुष्यों की प्राकृतिक समानता कमजोर हुई।
- **असमानता और निजी स्वामित्व:** रूसो ने असमानता की उत्पत्ति पर प्रवचन में तर्क दिया कि निजी स्वामित्व के उद्भव के बाद ही समाज में असमानता और प्रभुत्व की भावना पैदा हुई। उन्होंने निजी स्वामित्व को खत्म करने के बजाय, लोगों की संपत्ति को सीमित करके एक ऐसी सामाजिक व्यवस्था की वकालत की जहां महान धन या महान गरीबी न हो।
- **तर्क की तुलना में सहानुभूति को प्राथमिकता:** रूसो ने ज्ञानोदय की तर्क-आधारित नैतिकता की आलोचना की और इसके बजाय सहानुभूति को नैतिकता के एक प्रमुख आधार के रूप में प्रस्तुत किया। उन्होंने तर्क दिया कि तर्क और ज्ञान, विशेष रूप से उनका अत्यधिक आनंद लेने वाले बौद्धिक वर्ग के भीतर, समुदाय में योगदान करने के बजाय निजी भोग-विलास का कारण बन सकते हैं।
- **कला और विज्ञान पर विवादास्पद विचार:** रूसो ने कला और विज्ञान को ज्ञानोदय के भ्रष्ट प्रभावों के रूप में आलोचना की, यह तर्क देते हुए कि वे समाज को बेहतर बनाने के बजाय जटिलता और स्वार्थ को बढ़ाते हैं। हालांकि, उन्होंने स्वीकार किया कि जिन समाजों में भ्रष्टाचार पहले से ही गहरा है, वहां ये

कला और विज्ञान उन कुछ लोगों के लिए एक सुखद विश्राम हो सकते हैं जो अभी तक प्रभावित नहीं हुए हैं।

यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि रूसो ने ज्ञानोदय के कुछ तत्वों, जैसे कि सामाजिक अनुबंध और लोकतंत्र के प्रति अपनी प्रतिबद्धता के साथ ही, ज्ञानोदय के आदर्शों की अपनी महत्वपूर्ण आलोचना प्रस्तुत की।

सत्रीय कार्य II

निम्न मध्यम श्रेणी प्रश्नों के उत्तर लगभग 250 शब्दों (प्रत्येक) में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 10 अंकों का है।

1) रूसो की आम वसीयत (General Will) क्या है? व्याख्या कीजिए।

उत्तर : रूसो की "आम वसीयत" या सामान्य इच्छा (General Will) समाज के सभी नागरिकों की वह सामूहिक और विवेकपूर्ण इच्छा है जो सार्वजनिक भलाई और न्याय पर आधारित होती है। यह व्यक्तिगत, स्वार्थी इच्छाओं से भिन्न है, जो केवल एक व्यक्ति या समूह के लाभ पर केंद्रित होती हैं। रूसो के अनुसार, एक वैध समाज में नागरिकों को अपनी व्यक्तिगत इच्छाओं का त्याग करके सामान्य इच्छा का पालन करना चाहिए, क्योंकि यही सच्ची स्वतंत्रता है और एक सुव्यवस्थित राज्य की नींव है।

रूसो की आम वसीयत की व्याख्या

- **सार्वजनिक भलाई पर केंद्रित:** सामान्य इच्छा का लक्ष्य पूरे समाज का कल्याण होता है, न कि किसी व्यक्ति या समूह का स्वार्थ। यह सभी के सर्वोत्तम हित के लिए होती है।
- **व्यक्तिगत इच्छा से भिन्न:** रूसो "सभी की इच्छा" (will of all) और "सामान्य इच्छा" (general will) के बीच अंतर करते हैं। "सभी की इच्छा" केवल सभी व्यक्तिगत इच्छाओं का योग है, जिसमें स्वार्थ भी शामिल हो सकता है। इसके विपरीत, "सामान्य इच्छा" एक विवेकपूर्ण और नैतिक इच्छा है जो सार्वजनिक हित को बढ़ावा देती है।
- **नागरिकों को कानूनों में भाग लेना चाहिए:** रूसो मानते थे कि सामान्य इच्छा को व्यक्त करने के लिए नागरिकों को कानूनों के निर्माण में प्रत्यक्ष रूप से भाग लेना चाहिए। यह एक ऐसा आदर्श है जिसे छोटे राज्यों में लागू किया जा सकता है।
- **संप्रभुता जनता में निहित है:** सामान्य इच्छा को जन-संप्रभुता की अभिव्यक्ति माना जाता है। संप्रभु शक्ति किसी सम्राट या सरकार में नहीं, बल्कि लोगों के समूह में निहित है।
- **कानूनों का पालन स्वतंत्रता है:** रूसो के अनुसार, सामान्य इच्छा द्वारा बनाए गए कानूनों का पालन करना स्वतंत्रता है, क्योंकि यह एक ऐसा शासन है जिसे नागरिक स्वयं अपने लिए स्थापित करते हैं। जो लोग सामान्य इच्छा का पालन नहीं करते, वे अपनी स्वतंत्रता को "मजबूरन" वापस पाते हैं, यानी उन्हें समाज की भलाई के लिए ऐसा करने के लिए मजबूर किया जाता है।
- **आलोचना और संभावना:** आलोचकों का मानना है कि सामान्य इच्छा के नाम पर बहुमत की तानाशाही या सत्तावाद का खतरा हो सकता है, जहाँ राज्य "सामान्य इच्छा" का हवाला देकर व्यक्तियों की स्वतंत्रता को कुचल सकता है।

2) रूसो द्वारा उदार शिक्षा की आलोचना की चर्चा कीजिए।

उत्तर : रूसो ने उदार शिक्षा की आलोचना इसलिए की क्योंकि उनका मानना था कि यह बच्चों को उनके प्राकृतिक रूप से दूर करती है, उन्हें समाज के कृत्रिम और भ्रष्ट मूल्यों की ओर ले जाती है। उन्होंने तर्क दिया कि यह शिक्षा बच्चों की मौलिकता को दबाती है, सीखने की प्रक्रिया को एकतरफा बना देती है, और समाज में असमानता और भौतिकवाद को बढ़ावा देती है। रूसो के अनुसार, शिक्षा को व्यक्ति को प्रकृति के साथ सामंजस्य में विकसित करना चाहिए, न कि सामाजिक दबावों और किताबों की किताबी शिक्षा से उसे विकृत करना चाहिए।

रूसो द्वारा उदार शिक्षा की आलोचना के मुख्य बिंदु:

- **कृत्रिमता और समाज का नकारात्मक प्रभाव:** रूसो ने पारंपरिक शहरी शिक्षा की निंदा की, जिसे उन्होंने कृत्रिम और प्रकृति के विपरीत माना। उनका मानना था कि शिक्षा बच्चों को भ्रष्ट सामाजिक मूल्यों से प्रभावित करती है, जो उनकी जन्मजात अच्छाई को नष्ट कर देते हैं।
- **मौलिकता का दमन:** रूसो के अनुसार, उदार शिक्षा बच्चों को उनकी मौलिकता से वंचित करती है, क्योंकि यह उन पर बाहरी विचारों और व्यवहारों को थोपती है।
- **सीखने की एकतरफा प्रक्रिया:** उन्होंने तर्क दिया कि पारंपरिक शिक्षा एकतरफा है, जिसमें केवल शिक्षक और पुस्तक से ज्ञान प्राप्त होता है, जबकि एक वास्तविक सीखने की प्रक्रिया में बच्चे को प्रकृति, लोगों और वस्तुओं के साथ बातचीत करने की आवश्यकता होती है।
- **पुस्तकों पर अत्यधिक निर्भरता:** रूसो ने 12 वर्ष की आयु तक पुस्तकीय शिक्षा का विरोध किया, क्योंकि उनका मानना था कि बच्चे को स्वयं के अनुभवों और अवलोकन के माध्यम से सीखना चाहिए। उनके अनुसार, "क्या मैं पुस्तक से घृणा करता हूं जो हम नहीं जानते वे उसी के बारे में हमें बातचीत करना सिखाती हैं।"
- **बालक की स्वतंत्रता का हनन:** रूसो ने पारंपरिक शिक्षा को बालक की स्वतंत्रता का उल्लंघन माना। उन्होंने "नकारात्मक शिक्षा" (Negative Education) की वकालत की, जहाँ शिक्षक को केवल अनुभव की व्यवस्था करनी होती है और बच्चे को अपने कार्यों के प्राकृतिक परिणामों का अनुभव करने देना होता है।

3)मैरी वौल्सटोनक्राफ्ट द्वारा फ्रांसीसी क्रांति के बचाव और एडमंड बर्क के विचारों पर उनकी आलोचना का विस्तारपूर्वक वर्णन कीजिए।

उत्तर : मैरी वोलस्टोनक्राफ्ट ने फ्रांसीसी क्रांति का बचाव यह तर्क देते हुए किया कि यह पारंपरिक और अन्यायी परिस्थितियों का परिणाम थी। उन्होंने एडमंड बर्क के विचारों की आलोचना अपनी पुस्तक "**द विन्डिकेशन ऑफ द राइट्स ऑफ मेन**" में की। वोलस्टोनक्राफ्ट ने बर्क के परंपरा और स्थापित संस्थानों के प्रति भारी समर्थन की निंदा की और तर्क दिया कि क्रांति की आवश्यकता थी क्योंकि मौजूदा व्यवस्था, विशेष रूप से महिलाओं और गरीबों के प्रति, अन्यायी थी। उन्होंने वोलस्टोनक्राफ्ट के बचाव को तर्क, प्रगति और तर्कसंगतता पर केंद्रित किया, जबकि बर्क के विचारों को तर्कहीन और दमनकारी बताया।

वोलस्टोनक्राफ्ट की फ्रांसीसी क्रांति का बचाव

- **क्रांति की आवश्यकता:** वोलस्टोनक्राफ्ट के अनुसार, फ्रांसीसी क्रांति एक अन्यायी और दमनकारी व्यवस्था की प्रतिक्रिया थी। यह उन स्थितियों का परिणाम था जो लोगों के साथ दुर्व्यवहार और अन्याय पर आधारित थीं।

- **तर्क और प्रगति में विश्वास:** वे ज्ञानोदय के विचारों से प्रभावित थीं और तर्कसंगतता में विश्वास करती थीं। उनका मानना था कि समाज को परंपरा और रीति-रिवाजों के बजाय तर्क पर आधारित होना चाहिए।
- **समानता का अधिकार:** वोलस्टोनक्राफ्ट का मानना था कि सभी को समान अधिकार प्राप्त हैं। उन्होंने तर्क दिया कि बर्क की व्यवस्था उन लोगों के साथ अन्याय करती है जो समाज में नहीं हैं।

एडमंड बर्क की आलोचना

- **परंपरा का समर्थन:** बर्क पारंपरिक संस्थाओं, जैसे राजशाही, और क्रमिक सुधारों का समर्थन करते थे। वे क्रांतिकारी परिवर्तनों के बजाय धीरे-धीरे होने वाले सुधारों के पक्ष में थे।
- **"फिसलन भरी ढलान" का तर्क:** वोलस्टोनक्राफ्ट ने बर्क के "फिसलन भरी ढलान" के तर्क का खंडन किया। बर्क का मानना था कि एक बार जब आप परंपरा पर प्रहार करते हैं, तो पूरी व्यवस्था ढह जाएगी। वोलस्टोनक्राफ्ट ने इसे अस्वीकार कर दिया।
- **तर्कहीनता की निंदा:** वोलस्टोनक्राफ्ट ने बर्क की आलोचना करते हुए कहा कि उनका समर्थन तर्कहीन और अन्यायी था। उन्होंने बर्क की व्यवस्था की तुलना पाखंड से की, जिसने न केवल महिलाओं के साथ अन्याय किया, बल्कि दास प्रथा को भी बनाए रखा।
- **प्रगति और तर्कसंगतता:** वोलस्टोनक्राफ्ट ने तर्क दिया कि बर्क के विचार प्रगति के विरोधी थे। उनका मानना था कि किसी भी समाज को तर्कसंगतता, प्रगति और समानता पर आधारित होना चाहिए। उनका तर्क था कि बर्क की व्यवस्था केवल अन्याय और दमन को बढ़ावा देती है।

सत्रीय कार्य III

निम्न लघु श्रेणी प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों (प्रत्येक) में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 6 अंकों का है।

1) शिक्षा पर रूसों के विचारों की वौल्सटोनक्राफ्ट द्वारा आलोचना को जाँचिए।

उत्तर : मैरी वोलस्टोनक्राफ्ट ने रूसो के शिक्षा संबंधी विचारों की आलोचना की, विशेषकर महिलाओं की शिक्षा को लेकर। उन्होंने रूसो के इस विचार को खारिज कर दिया कि महिलाओं को केवल पुरुषों की सेवा और घरेलू मामलों के लिए तैयार किया जाना चाहिए, और पुरुषों के समान तर्क और स्वतंत्र सोच के लिए उन्हें भी शिक्षित किया जाना चाहिए। वोलस्टोनक्राफ्ट का मानना था कि दोनों लिंगों के लिए शिक्षा का समान होना ज़रूरी है, ताकि वे तार्किक और तर्कशील व्यक्ति बन सकें।

वोलस्टोनक्राफ्ट की आलोचना के मुख्य बिंदु

- **समान शिक्षा की मांग:** वोलस्टोनक्राफ्ट का मुख्य तर्क यह था कि महिलाओं को लड़कों की तरह ही समान शिक्षा मिलनी चाहिए ताकि वे अपने तर्कसंगत और नैतिक व्यक्तित्व को विकसित कर सकें।
- **'एमिल' में महिलाओं की भूमिका:** उन्होंने रूसो की 'एमिल' में महिलाओं के लिए सुझाए गए आश्रित और सीमित शिक्षा के विचार की कड़ी आलोचना की। वोलस्टोनक्राफ्ट के अनुसार, रूसो ने महिलाओं को केवल पुरुषों की इच्छाओं को पूरा करने के लिए एक साधन के रूप में देखा, जो कि अनुचित था।

- **तर्क और बौद्धिक क्षमता:** रूसो ने महिलाओं को स्वाभाविक रूप से तर्क करने में कमज़ोर माना, जबकि वोलस्टोनक्राफ्ट ने इस दृष्टिकोण का खंडन किया। उनका मानना था कि महिलाओं में भी पुरुषों के समान बौद्धिक और तार्किक क्षमता होती है और शिक्षा के माध्यम से इसे विकसित किया जाना चाहिए।

2) व्यक्तिवाद पर जे. एस. मिल के विचारों पर चर्चा कीजिए।

उत्तर : जे. एस. मिल के व्यक्तिवाद के विचार के अनुसार, **व्यक्ति स्वयं पर संप्रभु है** और उसे अपनी स्वतंत्रता का अधिकार है, जब तक कि उसके कार्य दूसरों को नुकसान न पहुँचाएँ। उनके अनुसार, व्यक्ति को अपने शरीर, मन और विचारों पर पूर्ण अधिकार है और समाज या राज्य को उसकी **"आत्म-रक्षा" (self-protection)** के उद्देश्य से ही उसके मामलों में हस्तक्षेप करना चाहिए, ताकि दूसरों को नुकसान से बचाया जा सके। मिल ने इस स्वतंत्रता को व्यक्तिगत, बौद्धिक और कलात्मक अभिव्यक्तियों तक फैलाया, जिसे उन्होंने अपनी पुस्तक **"ऑन लिबर्टी"** में व्यापक रूप से प्रस्तुत किया है।

व्यक्तिवाद पर मिल के विचारों का विस्तार:

- **व्यक्ति की संप्रभुता**: मिल का मूल सिद्धांत था कि "व्यक्ति स्वयं पर, अपने शरीर और मन पर संप्रभु है"। इसका अर्थ है कि उसे अपने जीवन और विचारों के बारे में स्वतंत्र रूप से निर्णय लेने का अधिकार है।
- **हानि सिद्धांत**: मिल के व्यक्तिवाद का आधार उनका प्रसिद्ध **हानि सिद्धांत** है। इस सिद्धांत के अनुसार, व्यक्ति की स्वतंत्रता पर केवल तभी प्रतिबंध लगाया जा सकता है जब उसके कार्य दूसरों को नुकसान पहुँचा रहे हों। केवल एक व्यक्ति की "अपनी भलाई" (well-being) उसके कार्यों पर प्रतिबंध लगाने का पर्याप्त कारण नहीं है।
- **स्वतंत्रता का दायरा**: मिल ने व्यक्तिगत स्वतंत्रता को केवल राजनीतिक स्वतंत्रता तक ही सीमित नहीं रखा, बल्कि इसमें विचार, अभिव्यक्ति और जीवन के अन्य सभी क्षेत्रों को भी शामिल किया, जिनमें कलात्मक और बौद्धिक गतिविधियाँ शामिल हैं। उन्होंने तर्क दिया कि व्यक्तिगत स्वतंत्रता के बिना मानवीय विकास संभव नहीं है।
- **विचार और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता**: मिल का मानना था कि विचारों और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर प्रतिबंध लगाना सत्य को प्रतिबंधित करने के समान है। उनका मानना था कि वाद-विवाद और विचार-विमर्श के माध्यम से ही सत्य की खोज की जा सकती है।

3) द्वंद्वात्मक पद्धति पर एक लेख लिखिए।

उत्तर : द्वंद्वात्मक पद्धति विचारों को उजागर करने और उच्चतर समझ तक पहुँचने के लिए विरोधी शक्तियों या अंतर्विरोधों की जाँच करने की एक संवाद या तर्क-वितर्क की विधि है। यह 'थीसिस' (प्रारंभिक विचार), 'एंटीथिसिस' (विरोधी विचार), और 'सिंथेसिस' (दोनों का सामंजस्यपूर्ण समाधान) की एक त्रि-स्तरीय प्रक्रिया पर आधारित है। इस पद्धति का उपयोग दर्शनशास्त्र, इतिहास और राजनीति जैसे क्षेत्रों में किया जाता है ताकि सत्य की प्रकृति और समाज में परिवर्तन को समझा जा सके।

द्वंद्वात्मक पद्धति: मुख्य तत्व

- **थीसिस (Thesis):** यह एक प्रारंभिक विचार, दावा या सिद्धांत है जो चर्चा के लिए प्रस्तुत किया जाता है।
- **एंटीथिसिस (Antithesis):** यह थीसिस के विपरीत, एक विरोधी या खंडनकारी विचार है।
- **सिंथेसिस (Synthesis):** थीसिस और एंटीथिसिस के बीच टकराव और चर्चा से एक नया और अधिक विकसित विचार उत्पन्न होता है, जो दोनों के पहलुओं को शामिल करता है। यह एक सामंजस्यपूर्ण दृष्टिकोण होता है जो पिछले दोनों विचारों को प्रतिस्थापित करता है।

उदाहरण

- **थीसिस:** "सभी मनुष्य सुख चाहते हैं"।
- **एंटीथिसिस:** "कुछ मनुष्य स्वेच्छा से दुख चुनते हैं"।
- **सिंथेसिस:** "मनुष्य उसी चीज़ का पीछा करता है जिसे वह सार्थक समझता है, और इसमें सुख या दुख दोनों शामिल हो सकते हैं"।

उपयोग और महत्व

- **बौद्धिक विकास:** यह पद्धति व्यक्तिगत और सामाजिक सोच को आलोचनात्मक और गहन बनाने में मदद करती है।
- **सत्य की खोज:** इसका उद्देश्य केवल एक पक्ष को जिताना नहीं, बल्कि तर्क और संवाद के माध्यम से सत्य तक पहुँचना है।

4) वर्ग की मार्क्सवादी परिभाषा का विस्तारपूर्वक वर्णन कीजिए।

उत्तर : मार्क्सवादी परिभाषा के अनुसार, **वर्ग** समाज का एक ऐसा समूह है जो उत्पादन के साधनों (जैसे कारखाने, भूमि, आदि) के संबंध में एक समान स्थिति साझा करता है। यह आर्थिक स्थिति वर्ग को परिभाषित करती है, और इसके आधार पर समाज में मुख्य रूप से दो विरोधी वर्ग होते हैं: **पूंजीपति वर्ग** जो उत्पादन के साधनों के मालिक हैं, और **सर्वहारा वर्ग** जो अपनी मज़दूरी के लिए अपना श्रम बेचते हैं।

वर्ग की मार्क्सवादी परिभाषा का विस्तार

- **उत्पादन के साधनों से संबंध**: वर्ग की पहचान इस बात से होती है कि एक व्यक्ति का उत्पादन प्रक्रिया से क्या संबंध है। जो लोग उत्पादन के साधनों के मालिक हैं (पूंजीपति) और जो लोग अपना श्रम बेचते हैं (मजदूर), उनके हित स्वाभाविक रूप से विपरीत होते हैं।
- **आर्थिक स्थिति**: मार्क्सवाद में वर्ग केवल आर्थिक स्थिति ही नहीं, बल्कि समाज में व्यक्ति की आर्थिक स्थिति है, जिसमें उसके पास मौजूद संसाधन और उसका पेशा शामिल है।
- **दो मुख्य वर्ग**:
    - **पूंजीपति वर्ग (Burgueoisie)**: वे लोग जो उत्पादन के साधनों के मालिक हैं और मजदूरों के श्रम का उपयोग करके लाभ कमाते हैं।
    - **सर्वहारा वर्ग (Proletariat)**: वे लोग जिनके पास उत्पादन के साधन नहीं हैं और वे जीवित रहने के लिए अपनी मजदूरी पर निर्भर हैं।

5) घरेलू कामकाज के समाजीकरण पर एलेक्जेंड्रा कोलोंनताई के विचारों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर : एलेक्जेंड्रा कोल्लोंताई के अनुसार, महिलाओं की मुक्ति के लिए घरेलू कामकाज का समाजीकरण आवश्यक था। उन्होंने प्रस्ताव दिया कि सामुदायिक रसोई, लॉन्ड्री और बाल देखभाल केंद्रों जैसी राज्य-संचालित सुविधाओं के माध्यम से इन कार्यों को सामूहिक रूप से किया जाए। इसका उद्देश्य महिलाओं को घर और बाहर काम करने के दोहरे बोझ से मुक्त करना था, ताकि वे अपने परिवार के बजाय समाज के लिए काम कर सकें और सामाजिक विकास में भाग ले सकें।

- **सामुदायिक सेवाएं:** कोल्लोंताई का मानना था कि सामुदायिक रसोई, लॉन्ड्री और बाल देखभाल जैसे सामूहिक केंद्रों से यह बोझ कम होगा।
- **महिलाओं की मुक्ति:** इन सुविधाओं के माध्यम से, महिलाओं को पारंपरिक घरेलू श्रम से मुक्त किया जा सकता था, जिससे उन्हें आर्थिक और सामाजिक रूप से सशक्त बनने में मदद मिलती।
- **पारंपरिक परिवार का विघटन:** कोल्लोंताई ने परिवार को एक दमनकारी संस्था माना और तर्क दिया कि साम्यवाद के आगमन के साथ, पारंपरिक परिवार का विघटन होना चाहिए, क्योंकि यह संपत्ति-आधारित और व्यक्तिवादी था।
- **समाज के प्रति कर्तव्य:** उनका मानना था कि साम्यवाद के तहत, पुरुष और महिलाएँ अपने परिवार के बजाय समाज के लिए काम करेंगे और समाज उनकी देखभाल करेगा।
- **बच्चों की शिक्षा:** उन्होंने यह भी सुझाव दिया कि बच्चों का पालन-पोषण और शिक्षा समाज की सामूहिक जिम्मेदारी होनी चाहिए, हालांकि माता-पिता का स्नेह और आनंद बरकरार रहेगा।
- **व्यावहारिक कार्यान्वयन:** कोल्लोंताई ने ज़ेनोट्डेल (महिला विभाग) के माध्यम से इन विचारों को लागू करने का प्रयास किया, लेकिन उन्हें कर्मचारियों की कमी और पार्टी के भीतर विरोध का सामना करना पड़ा।

IGNOU IQ Hindi

ZOOM CLASS

All courses are available

PACKAGE DETAILS

- Free Study Materials
- Practice sets (HardCopy)
- Revision before Exams
- Monday to Friday Classes

JOIN NOW

CONTACT US
6205717642/8521027286

www.ignouiqhindi.Com

GUESS PAPER

5 Years Previous Questions Answers

GUESS PAPER

BPSC - 103

Disclaimer for this Guess Paper/Notes/Sample Papers By IGNOU IQ HINDI (IIH)

This PDF contains previous year questions asked by IGNOU. This PDF has been created to help you in the exam. However, It is important to note the following :

A. No Guarantee of Examination Questions: We do not guarantee that the questions presented in this sample paper will appear in your actual exams. The content is for practice purposes only.

B. Book Study Recommended: To achieve good marks in your IGNOU exams, it is highly recommended that you thoroughly study the prescribed course materials and textbooks. Relying solely on this sample paper may not be sufficient for exam success.

C. Use as a Study Materials : Use this sample paper as a supplementary study aid to test your knowledge and exam preparedness.

D. Self-Responsibility: Your performance in exams is your responsibility, and success depends on your dedication to studying the course material.

हमारे यहाँ IGNOU के सभी COURSES के Study Materials जैसे ; Guess Paper/Book Notes/ Practice Sets बहुत ही सरल भाषा में उपलब्ध है.

Our Website
Www.ignouiqhindi.Com

Phone Number
6205717642/8521027286